सत्रीय कार्य 2024

बी.ए. /बी.कॉम. / बी.एस.सी. द्वितीय सेमेस्टर

मध्यकालीन हिंदी काव्य (GEC)

• प्रत्येक इकाई में प्रत्येक प्रश्न का भाग 'क' एवं 'ख' अतिलघूत्तरी प्रश्न हैं। जिनके उत्तर एक या दो वाक्यों में दें। प्रत्येक इकाई के भाग 'ग' सप्रसंग व्याख्या है। भाग 'घ' (दीर्घ उत्तरीय प्रश्न) के उत्तर 400-450 शब्दों में दें।

इकाई 1

क - कबीर की भाषा को किस नाम से जाना जाता है। (1)

ख -किस कवि ने जीवन में गुरु का महत्व प्रतिपादित किया है। (1)

ग-निम्न में से किसी एक का सप्रसंग व्याख्या कीजिए- (3)

सतगुर की महिमा अनँत, अनंत किया उपकार।
लोचन अनंत उघाड़िया, अनँत दिखावणहार ।।

अथवा

राम नाम कै पटतरै देबै को कछू नाहिं।
क्या लै गुंर संतोषिए हौंस रही मन माँहि ॥

घ- कबीर समाज सुधारक पहले है कवि बाद में ।कथन को स्पष्ट कीजिए। (5)

अथवा

कबीर के काव्य में रहस्यात्मकता एवं उलटबांसी को स्पष्ट कीजिए।

इकाई 2

क- सूरदास की रचनाओं के नाम लिखिए। (1)

ख-भ्रमरगीत सार में किस रस की प्रमुखता है। (1)

ग-निम्न में से किसी एक का सप्रसंग व्याख्या कीजिए- (3)

जदुपति लख्यो तेहि मुसकात ।
कहत हम मन रही जोई सोइ भई यह बात ।।
बचन परगट करन लागे प्रेम-कथा चलाय ।
सुनहु उद्धव मोहिं ब्रज की सुधि नहीं बिसराय ॥
रैनि सोवत, चलत, जागत लगत नहिं मन आन।
नंद जसुमति नारि नर ब्रज जहाँ मेरो प्रान ॥
कहत हरि, सुनि उपँगसुत ! यह कहत हौं रसरीति ।
सूर चित तें टरति नाहीं राधिका की प्रीति ।।

अथवा

उद्धव ! यह मन निस्चय जानो।
मन क्रम बच मैं तुम्हें पठावत ब्रज को तुरत पलानो ॥
पूरन ब्रह्म, सकल अबिनासी ताके तुम हौ ज्ञाता।
रेख न रूप, जाति, कुल नाहीं जाके नहिं पितु-माता ॥
यह मत दै गोपिन कहँ आवहु बिरह-नदी में भासति ।
सूर तुरत यह जाय कहौ तुम ब्रह्म बिना नहिं आसति ।।

घ- सूरदास की भक्ति भावना पर प्रकाश डालिए। (5)

अथवा

भ्रमरगीत सार की वाग्वैदग्धतापर विचार कीजिए।